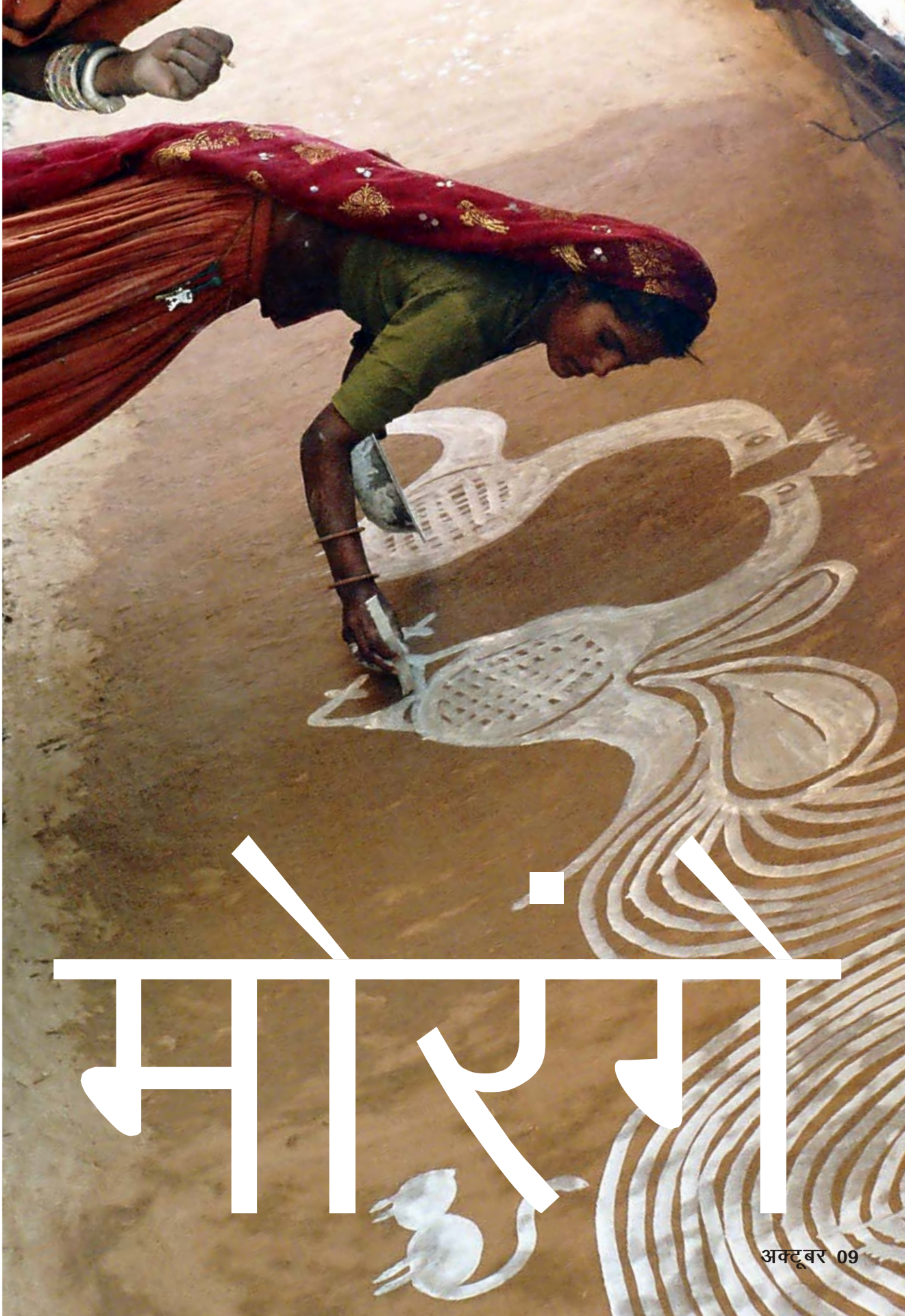

मोरंगी

अक्टूबर 09

इस बार

कविताएँ

स्कूल के रस्ते में है जंगल
मैं एक पेड़ के नीचे बैठता हूँ
जंगल हँसा
सूँई नै खोद दी कुँई
भौजी गे छउआ

कहानियाँ

लड़के का नाम बिलाड़ी था
कुत्ता, भेड़िया और सारस
मिस्टर बिल्ला

यादें

थर्माकोल के दाँत
इज़्ज़त बचायी

डायरी

तथा पखेरू मेरी याद के
व अन्य स्तम्भ

वर्ष 1 अंक 4

सम्पादन : प्रभात
सहयोग : भारती, मीनू मिश्रा
कमलेश, दिनेश शुक्ला
डिजाइन : शिव कुमार गाँधी
आवरण पर माँडना मदन
मीणा के सौजन्य से
प्रूफ : नताशा
वितरण : लोकेश राठौर
प्रबंधन : मनीष पांडेय सचिव,
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र

पत्रिका का पता
मोरंगे, ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
3/155, हाउसिंग बोर्ड,
सवाईमाधोपुर, राजस्थान
Email;graminswm@gmail.com
website; graminshiksha.in
ph.no. & fax 07462-233057

मैं दूसरी और तीसरी कक्षा शहर में पढ़ आया था। लेकिन भाया (पिता) की बदली गाँव के पास के डाकघर में हो जाने के कारण हम अपने गाँव में ही रहने लगे। इस तरह चौथी कक्षा में मैं गाँव के सरकारी स्कूल में पढ़ने लगा। इसी कक्षा में मेरा भाई (बड़े काका खिलारी का लड़का) गोपाल भी पढ़ता था। हालाँकि मैं शहर से लौटा था लेकिन जल्दी ही गोपाल ने मुझे अपने रंग में रंग लिया। मसलन नहाना नहीं, धोना नहीं, स्कूल से गायब रहना। हैजा ला देने वाली लू में खजूर की लोहड़की (खजूर के मीठे फल) झड़ाने गाँव से दो कोस दूर ठकुराईन के बाग में भूखे–प्यासे घूमना। ठिठुराते जाड़े की अँधेरी सुबहों में मोर के मोरंगे ढूँढने निकल जाना। खेतों में काम कर रहे बड़े भाया और बड़े काका की रोटी देने जाने में गहरी दिलचस्पी रखना। फिर खेतों की मेड़ों पर चलते हुए रास्ते में मिलने वाले गोहरों के डगड़ मारना। रास्ते में पोखर के किनारे की झाड़ियों में रोटियों को रखकर पोखर में कूद पड़ना। माने पिटाई खाने के लायक जो–जो काम हैं वे सारे काम पूरी लगन, कड़ी मेहनत और निष्ठा के साथ करना। उसके इन चक्करों में शाम को देर से घर पहँचने पर उसके साथ पिटाई खाने में भी शामिल होना पड़ता था। पर हमने अपनी उस जिन्दगी में कभी एक–दूसरे पर यह आरोप नहीं लगाया कि ये मुझे बहका कर ले गया था या यह कि मैं तो यहीं था ये ही पता नहीं इतनी रात गए कहाँ से चला आ रहा है। पिटाई में बाबा हम दोनों के हाथ बाँधकर खूँटी से बाँध देते। फिर ब्यालू के लिए तुरंत ही खोल देते। हमें अपनी थाली में घुसाये बिना बाबा से रोटी–राबड़ी खायी नहीं जाती थी।

हाँ, एक बार जरूर मैंने सर्दियों में दिन के दस बजे उसकी शिकायत बड़े काका से कर दी थी। कारण यह था कि मुझे कंचे खेलना नहीं आता था और वो मेरी परवाह किए बिना लड़कों के साथ खेलने के मजे लूट रहा था। मुझसे यह सहा नहीं गया। मैंने काका से कहा, ''काका मैं तो पढ़ने जा रहा हूँ और गोपाल तो किशोरी पटेल के बाड़े में कंचे खेल रहा है।'' काका ने

बाड़े के पास पहुँच कर कड़ककर कहा, ''छोरा गोपाल।'' जैसे ही गोपाल बाड़े से बाहर आया काका ने ऐसा झन्नाटे दार झापड़ मारा कि गोपाल तीन चक्कर खाते हुए धरती पर गिर पड़ा। पता नहीं क्यों मुझे दूर खड़े यह दृश्य देखकर मजा आ रहा था। फिर काका ने कहा, ''स्कूल चले जाओ साथ–साथ नहीं तो जान से खत्म कर दूँगा दोनों को।' हम काका की पीछा करती हुई आवाज़ के आगे–आगे भागे।

हम दोनों भाई दिन रात साथ रहते थे लेकिन मैं उसका एक भी हुनर नहीं सीख पाया। वह कहकर निशाना लगाता था कि मेरा पत्थर आकड़े के फलां पत्ते के जाकर लगेगा और उसका सनसनाता पत्थर आकड़े के पत्ते के किनारे को उड़ाते हुए गायब हो जाता। पत्थर तो ऐसे छूटते थे उसके हाथ से मानो चाप चढ़े धनुष से तीर छूटते हों। अवसर मिले होते तो मेरा भाई मशहूर निशानेबाज बनता।

मैं हर काम में उसकी होड़ करता और घाटे में रहता। माने मैं भी ठीक उसकी तरह पाँव आगे–पीछे और टेढ़े–मेढ़े करके पत्थर फेंकता। मगर मेरे फेंके हुए पत्थर ऊँचे जाकर या तो मेरे पैरों के आसपास की कहीं गिर पड़ते या फिर आगे जाने के बजाय पीछे की ओर छिटक जाते। वह मछलियों की तरह पोखर में उल्टा–सीधा, आजू–बाजू ऊपर–नीचे सब तरह से तैर लेता था। मैं केकड़े की तरह पोखर के तट के आसपास ही रहता। हालाँकि मैं शहर के प्राईवेट स्कूल से पढ़कर लौटा था पर पहाड़े गोपाल ही मुझसे ज्यादा जाने। घोटंत–विद्या में भी वही निपुण। गुणा–भाग की बात छोड़िए औसत चुटकी में कर दे। गाँव के लोग बातें करें, ''बताओ इन दोनो में कौन ज्यादा हुशियार ?'' जवाब आए, ''गोपाल।'' गाँव वाले हम दोनों भाईयों को शहर वाला और गाँव वाला कहकर चढ़ाते हुए मुर्गों की तरह लड़ा देते। वह मेरे अड़ंगी लगाकर गिराते हुए तुरंत लत्तों की धूल झाड़ते हुए दूर जा खड़ा होता। मुझे सोचने–समझने का मौका ही नहीं देता कि आखिर करना क्या है व कैसे ?वह मुझसे हर चीज में आगे रहता इसका मुझे कभी न तो दुख होता न खुशी। लेकिन गाँव वाले मुझे हारा हुआ कहकर जब मुझ पर हँसते तो मेरा चेहरा उतर जाता। मुझे ऐसी चोट पहुँचती जिसे मैं किसी से नहीं बाँट सकता था।

जल्दी ही गाँव में हम दोनों भाईयों की जोड़ी मशहूर हो गई। गर्मियों में हम दोनों भाई गाँव में जहाँ कहीं भी कुँओं पर इंजन चल रहा होता वहाँ नहाते। एक–एक कर गाँव के सभी इंजनों पर नहा आते। नहाने का तरीका ऐसा था कि कपड़े पहने ही नलकों के नीचे खड़े हो जाते। जब मन भर जाता तो ऐसे के ऐसे ही वहाँ से निकलकर चल देते। रास्ते में कपड़े अपने आप सूख जाते। बारिशों में तो जैसे पेड़–पौधे,पहाड़,भेड़–बकरियाँ सब अपने आप ही नहाते, हम भी नहाते। लेकिन दशहरा फिर दीपावली और उसके बाद जो जाड़ा आता हम दोनों भाईयों के शरीर नहाने की जरूरत महसूस करना बंद करने लगते। जब शरीर को ही जरूरत नहीं तो हम क्यों बेवजह जहमत उठायें। सो हम नहीं नहाते। इस बात से हमारे घरवालों पर भी कोई फर्क नहीं पड़ता। गाँव वालों पर तो पड़े ही क्यों! लेकिन स्कूल में हर सोमवार को हमारी खबर ली जाती। गाँव के स्कूल में भी सोमवार के दिन बच्चों के हाथ–पैरों पर मैल

जमा होने को देखने का चलन था। पाँचवी के तीन–चार बच्चे हरेक लाईन में हर बच्चे के पास जाकर देखते और बच्चों की भीड़ में डूबे हुए चिल्लाते, ''माटसाब पुखराज माली नहीं नहाया।'' ''माटसाब हरेती गूजर भी नहीं नहाया।'' ''माटसाब राधे–पप्पून के तो पापड़े जम रहे हैं पैरों में।''

मैं और गोपाल लाईन में एक जगह ही खड़े होते। चाहे ऐसे दूर–दूर रह लें लेकिन मुश्किल में भाई से भाई दूर नहीं जा सकता है। ''माटसाब इनकी तो पूछो ही मत। आगे बुलालो।'' तुलसी बैरवा चिल्लाते हुए हँसता।

''हाँ भाई राम मिलायी जोड़ी ! आगे को आ जाओ।'' माटसाब की पूस–माघ की ठंड से भी अधिक कड़कड़ाती आवाज हमारे कानों में पिल पड़ती।

हम दो बाल–अपराधियों की तरह गर्दन झुकाए आगे जाकर सब बच्चों की ओर मुँह करके खड़े हो जाते। ये हमारा हर हफ्ते का तयशुदा प्रोग्राम था। माटसाब हमारे धूल–धूसरित साँवले हाथों को ऊँचा कर उनमें जमे काँईयाँ मैल को दिखाते हुए कहते, ''देखो इनके सुंदर हाथ!'' हम दोनों अपने कुल चार हाथों को सबके सामने और ऊँचा कर देते। ऐसा नहीं करते तो माटसाब की स्टील की संडासी जैसी उंगलियाँ उन्हें कसकर पकड़ते हुए ऊँचा करती। फिर माटसाब अपने नाई के राछ सरीखे पंजे को हमारे सिर में चलाते हुए बालों को अजीब तरह से खींचते हुए कहते, ''देखो इनके श्यामल–कोमल केश।'' बच्चे हँस–हँस कर लोट–पोट हो जाते। इस कारण से नहीं कि हम दुर्लभ ढंग से गंदे थे बल्कि इस कारण की ऐसे अवसरों पर खूँखार हैड माटसाब राछलीला के श्रीदामा की तरह अभिनय करते हुए बोलते थे। वरना तो पूरे समय तो वे अपने खौफ बरपाने वाले रुआब से बाहर ही न आते थे। फिर माटसाब हमारी बुशर्टों पर धौल जमाते। बच्चों को तो बस मजा ही आ जाता। वे हँस–हँस कर गिरने लगते। फिर माटसाब राछलीला के श्रीदामा की सी सुरीली टेर लगाते हुए कहते, ''अरे बच्चों ! क्या अब मैं तुमको इनके सुशील थोबड़े भी दिखाऊँ जिन पर बिराईयाँ फट रही हैं।''

''अजी माटसाब जी रहने दो।'' बच्चे पैर पीट–पीट कर हँसते हुए एक दूसरे को धक्का लगाते हुए लाईन बिगाड़ने का आनंद लेते। ऐसी घनघोर विराट हँसी में शामिल हुए बिना हम दोनों भाई कैसे रहते ! हमें भी हँसी आ जाती। हम भी हँसते। ''नालायक कहीं के!'' घने काले केशों और मूँछों वाले बदन पर तेल चुपड़े पण्डित रूपनारायण चौबे माटसाब क्रोध से दहकती आँखों से हमें देखते तो हमें वे साक्षात काल की तरह दिखने लगते। वे हमें डपटते हुए धकियाते, ''दफा हो जाओ स्कूल से। नालायक कहीं के।'' हम दोनों भाई बुरी तरह भयभीत काँपती टाँगों से धीमे–धीमे चलते हुए स्कूल के अहाते से बाहर आ जाते।

प्रभात

मिस्टर बिल्ला

किस्सा बड़ा पुराना है। कहीं कोई आदमी रहता था। उसके घर में एक बिल्ला था, वह भी इतना बूढ़ा कि अब चूहे न पकड़ पाता था। एक दिन मालिक ने सोचा ''ऐसा बेकार बिल्ला किस काम का ?मैं इसे जंगल में छोड़ आता हूँ।'' वह बिल्ले को पकड़कर जंगल में छोड़ आया।

जंगल में बूढ़ा बिल्ला फर वृक्ष के नीचे बैठकर रोने लगा। तभी एक लोमड़ी दौड़ती हुई उधर से गुजरी। ''तुम कौन हो ?'' लोमड़ी ने पूछा।

बिल्ले ने गुस्से से बाल खड़े करते हुए कहा–''फू–फू! मेरा नाम मिस्टर बिल्ला है!''

लोमड़ी इस महिमावान मिस्टर बिल्ले से मिलकर फूली न समाई। फिर क्या था ?उसने मिस्टर बिल्ले के समक्ष झटपट यह प्रस्ताव भी रख दिया, ''मिस्टर बिल्ला, क्या आप मुझसे शादी कर लेंगे ?आपकी योग्य पत्नी बनकर रहूँगी। खाना बनाकर खिलाऊँगी।''

''ठीक है, तुम्हारा प्रस्ताव मुझे मंजूर है।''

फिर बिल्ला और लोमड़ी साथ–साथ रहने लगे। लोमड़ी बिल्ले की टहल करते हुए उसे हर तरह से खुश रखती। कभी मुर्गी पकड़ लाती, तो कभी कोई छोटा–मोटा जानवर उठा लाती। खुद चाहे खाए न खाए, बिल्ले का पेट जरूर भरती।

एक दिन लोमड़ी के यहाँ खरगोश आकर बोला।

''लोमड़ी, लोमड़ी, मैं तुम से सगाई करना चाहता हूँ। जल्द ही रस्म लेकर आऊँगा!''

''नहीं, मत आना! मेरे घर में मिस्टर बिल्ला विराजमान हैं। अगर मेरे यहाँ आओगे, तो पछताओगे। वह तुम्हें फाड़कर टुकड़े–टुकड़े कर डालेंगे।''

उधर बिल्ला बाहर निकल आया। उसके सारे रोएँ खड़े थे। छाती फुलाकर वह डरावनी आवाज में फुफकारने लगा। ''फू–फू''

बेचारे खरगोश का डर के मारे दम ही निकल गया। वह तुरन्त वहाँ से जंगल की तरफ तेजी से भागा। वहाँ जाकर उसने भेड़िये, भालू और जंगली सूअर से यह सारा किस्सा कह सुनाया कि कैसे उसने मिस्टर बिल्ला नामक एक खौफ़नाक जीव को लोमड़ी के घर में देखा। बस किसी तरह जान बचाकर भागता चला आया हूँ।

उन सभी ने मिलकर बिल्ले की खुशामद करने की एक तरकीब निकाली उसे लोमड़ी के साथ अपने यहाँ दावत पर बुलाने का फैसला किया। फिर क्या था ?मेहमान बिल्ले के स्वागत के लिए बढ़िया–बढ़िया खाने की लिस्ट बनाई जाने लगी। भेड़िये ने कहा– ''मैं मांस का इन्तजाम करूँगा, ताकि बढ़िया शोरबा बनाया जा सके।'' जंगली सूअर ने कहा, ''मैं चुकन्दर और आलू लेने जा रहा हूँ।'' भालू ने कहा, ''भाईयों, मैं जायकेदार शहद लाऊँगा। और खरगोश पत्तागोभी लाने के लिए भागा। इस तरह सबन मिलकर खाना

पकाया, खाना मेज पर लगा दिया गया और फिर वे आपस में बहस करने लगे कि लोमड़ी और मिस्टर बिल्ले को दावत के लिए बुलाने कौन जाए ? भालू बोला, ''मैं मोटा हूँ जल्दी हाँफने लग जाऊँगा।'' जंगली सूअर बोला, ''मेरी चाल बड़ी धीमी है, ऐसी चाल से भला क्या चल पाऊँगा।'' भेड़िया बोला, ''मैं बूढा हूँ और सुनता भी ऊँचा हूँ।'' मजबूर होकर खरगोश को ही निमंत्रण लेकर जाना पड़ा। खरगोश लोमड़ी के घर की ओर दौड़ पड़ा और वहाँ पहुँचकर उसने खिड़की पर तीन बार दस्तक दी, ''खट–खट–खट!''

लोमड़ी झट से उछलकर बाहर आई, देखती क्या है कि खरगोश अपने पिछले पंजो पर खड़ा है। ''क्या चाहिए?'' लोमड़ी ने पूछा।

''भेड़िये, भालू, जंगली सूअर और खुद अपनी ओर से मैं यह निमंत्रण लकर आया हूँ कि आप दोनों, यानी कि आप, श्रीमती लोमड़ी और मिस्टर बिल्ला आज हमारे यहाँ दावत पर आएँ।'' खरगोश यह कहकर तुरन्त भाग गया। घर लौटा तो भालू ने उससे पूछा। ''चम्मच लाने के लिए कहना तो नहीं भूला ?''

''अरे यह तो मैं भूल ही गया।'' खरगोश ने कहा। और फिर से लोमड़ी के घर जा पहुँचा। उसने खिड़की पर दस्तक दी। ''हमारे यहाँ टाते समय चम्मच लाना न भूलिएगा, ''खरगोश ने कहा। ''अच्छा, अच्छा, ''भूलेंगे नहीं!'' लोमड़ी सज–धजकर तैयार हो गयी और मिस्टर बिल्ले के हाथ में हाथ डालकर दावत खाने चल दी। मिस्टर बिल्ले ने फिर से अपने बाल खड़े कर लिए और फुफकारने लगा। उसकी आँखें ऐसे चमक रही थी जैसे जलते हुए दो हरे–हरे बल्ब हों। उसका यह रौब–दाब देखकर भेड़िया डर के मारे झाड़ी के पीछे दुबक गया। जंगली सूअर खाने की मेज के नीचे घुसकर बैठ गया। भालू किसी तरह पेड़ चढ़ गया और खरगोश अपनी माँद में जा छिपा। बिल्ले को जब मेज पर परोसे हुए मांस की महक मिली, तो झट से उधर झपटा और म्याऊँ–म्याऊँ करने लगा।

दूसरे जानवरों को लगा कि यह मेहमान, ''कम है, कम है, कम है!'' की रट लगा रहा है। ''बड़ा पेटू मेहमान है! इतनी सारी चीजें उसे कम लग रही हैं!'' मिस्टर बिल्ले ने छककर खाया, जमकर पिया और वहीं मेज पर खर्राटे लेकर सोने लगा।

उधर मेज के नीचे दुबके जंगली सूअर की दुम हिल रही थी। बिल्ले को लगा कि यह कोई चूहा है। वह उधर झपटा और जब देखा कि नीचे जंगली सूअर बैठा है, तो डरकर पेड़ पर चढ़ गया, जहाँ भालू बैठा हुआ था। भालू ने सोचा कि बिल्ला लड़ने आ रहा है, वह और ऊपर चढ गया। ऊपर की डाल टूट गयी और भालू जमीन पर गिर पड़ा। वह गिरा भी तो उसी झाड़ी पर जिसके पीछे भेड़िया छिपा बैठा था। भेड़िये ने सोचा कि अब उसका अन्त आ गया और अपनी जान लेकर भागा। भालू और भेड़िया इतनी तेजी से भागे कि फुर्तीला खरगोश भी क्या उनका पीछा करता। बिल्ले ने फिर से मेज पर चढकर मांस और शहद पर हाथ साफ करना शुरू कर दिया। इस तरह मिस्टर बिल्ले और लोमड़ी ने मिलकर सारा खाना चट कर डाला और घर चले गये। भेड़िया, भालू, जंगली सूअर और खरगोश जब लौटकर वहाँ आए तो बोले ''कैसा जानवर है! इतना छोटा और ऐसा पेटू कि हम सबको ही खा डालता!''

(उक्राइनी कथाओं से साभार)

लड़के का नाम बिलाड़ी था

एक बार एक लड़का था। उसका नाम बिलाड़ी था। बिलाड़ी एक दिन बेर खाने की सोच रहा था। वह बेर खाने चला गया। झाड़ी के नीचे रीछ बैठा था। रीछ ने उसकी टाँग पकड़ ली। बिलाड़ी कहता रहा कि ''मैं एक बिलाड़ी पाली छे, थारी बहू महलों की राणी छे।'' पर रीछ पर उसकी बात का कोई असर नहीं हुआ। उसने बिलाड़ी को घायल कर दिया। रीछ उसे घायल करके वहीं पड़ा छोड़कर चला गया।

तभी कहीं से बिलाड़ी के दोस्त उधर आ गए। दोस्तों ने बिलाड़ी को सम्हाला और कहा कि पानी पियेगा ?बिलाड़ी कुछ बोल पाने की हालत में नहीं था। पास में ही एक बाँध था। एक दोस्त बाँध में से पानी ले आया और उसने बिलाड़ी को पिला दिया। पानी बिलाड़ी के मुँह में चला गया। अब उसने धीरे से कहा मेरे को घर ले चलो।

बिलाड़ी के दोस्त उसे घर ले जा रहे थे लेकिन रास्ते में उसने दम तोड़ दिया। दोस्तों ने घर पर आकर बता दिया कि बिलाड़ी मर चुका है। यह सुनते ही उनको आश्चर्य हुआ। बोले कि वह तो बेर खाने गया है। बिलाड़ी के दोस्तों ने कहा कि वह अपने खेत की डोड़ी पर मरा पड़ा है। सब लोग खेत पर गए।

वे अब बिलाड़ी को शमशान की ओर ले जा रहे थे। अब बिलाड़ी ने साँस ले ली। लोगों ने उसने नीचे उतार कर देखा तो वह हँस रहा था। गाँव के लागे हँसते–बोलते हुए बिलाड़ी को घर ले आए।

राजेन्द्र गुर्जर, उम्र–10 वर्ष, समूह–बादल

भेड़िया, कुत्ते और सारस

एक दिन एक भेड़िये को बहुत जोर की प्यास लगी। तो वह घूमता फिरता एक गाँव में आ गया। गाँव में उसने दो कुत्ते देखे। वह कुत्तों के पास चला गया और बोला, '' आप गाँव में क्या खाते हो ?'' कुत्ते बोले, ''हम रोज दो रोटी खाते हैं। फिर हमारे मालिक के घरों की रखवाली करते हैं। खेती बाड़ी की देखभाल करते हैं।'
भेड़िया बोला, और ?'
कुत्ते बोले, 'और फिर हम गाँव में घूमने चले जाते हैं।'
एक कुत्ते ने पूछा, ''और आप जंगल में क्या खाते हो ?''
भेड़िया बोला,''हम जंगल में मांस–मछली खाते हैं और छोटे जानवरों को मार कर खा जाते हैं।

एक दिन भेड़िया जंगल में मांस–मछली खा रहा था। खाते–खाते उसके गले में हड्डी अटक गई। वह जोर–जोर से चिल्लाने लगा। जंगल के सारे जानवर दौड़े आए। एक पुराना बूढ़ा सारस भी दौड़ता, शोर मचाता आया। भेड़िए ने कहा, 'तुम मेरे पुराने मित्र हो। तुम हड्डी निकाल सकते हो। सारस ने कहा कि मैं क्या चीज से निकालूँगा ?भेड़िये ने कहा कि तुम अपनी नुकली चोंच से निकाल सकते हो। सारस ने भेड़िए के गले से हड्डी चोंच से निकाली, तब ही भेड़िए की जान बची।

फिल्मा मीणा, उम्र–10 वर्ष, समूह–झील, जगनपुरा

स्कूल के रस्ते में है जंगल

स्कूल के रस्ते में है जंगल
शेरों से ना डरता हूँ
रस्ते–रस्ते चलता हूँ

रस्ते–रस्ते चलता हूँ
मोरों की सुंदर आवाज़ें
सुनता हूँ
जंगल के बंदरों को
देखता हुआ चलता हूँ

गीत सुरीले गाते हुए चलता
हूँ
रस्ते–रस्ते चलता हूँ

मोर डूँगरी से आता हूँ
रस्ते–रस्ते आता हूँ स्कूल
स्कूल के रस्ते में है जंगल
रस्ते–रस्ते चलता हूँ

रामचरण नायक, उम्र 16 वर्ष, समूह–सूरज

डायरी

1

एक घर था। उसमें बहुत सारे बच्चे रहते थे। लेकिन एक बच्चा नहीं रहता था। बच्चे खेलते–खेलते थक जाते थे। पेड़ भी थे वो भी खाना खाते थे। एक पेड़ खाना नहीं खाता था। सब कहते थे कि थोड़ा सा खाना खा लो, भूख मिट जायेगी। लेकिन पेड़ नहीं माना। सबने कहा फिर भी खाना नहीं खाया। फिर पेड़ ने खाना खा लिया। सब बहुत खुश हुए।

2

एक चिड़िया थी। वह बहुत भूखी थी। उड़ती–उड़ती वह एक दाने के पास पहुँची। उस दाने को लेकर वह अपने घोंसले में चली गयी। उसके बच्चे चीं–चीं कर रहे थे। उसने अपने बच्चों को दाना खिलाया। फिर बच्चे फर–फर उड़ गये।

3

एक लड़की थी। बस चुप होकर चलती थी। सब कहते थे यह लड़की बोलती कुछ नहीं, वह बस चुप रहती है।

विजया, उम्र 7 वर्ष, समूह–इन्द्रधनुष

जंगल हँसा

मोर तोते में हुई लड़ाई
बचाने आया पेड़ भाई
मोर में था गुस्सा
झाड़ी में था सुस्सा
उसको देख के मोर हँसा
मोर हँसा तो तोता हँसा
तोता हँसा तो पेड़ हँसा
पेड़ हँसा तो खरगोश हँसा
सब हँसे तो जंगल हँसा

मोहित, उम्र–6 वर्ष, समूह–रोशनी

भौजी गे छउआ

नदी–नदी घुमालै
चिमिट साग भिटालै
भौजी गे चुनू–मुनू छउआ
के कादौ लेटा लै

भाभी तुम्हारे बच्चे

ऐ भाभी तुम्हारे बच्चे चुनू–मुनू
नदी–नदी घूम रहे हैं
चिमिट साग ढूँढ रहे हैं
उनके पैर कीचड़ में हो गए हैं

(झारखण्ड के लोकगीत का अंश।
प्रस्तुति–**मनीष पांडेय)**

सेजल

सूँई नै खोद दी कुँई

बात कहूँ साँची,
धन्या की बहू नाची
धन्या ने फेक्यों गोड़ो
बाबाजी होगो घोड़ो
बाबाजी ने फेंकी तूमी
झाड़–झाड़ कै लूमी
झाड़ ने फेंक्यों बोर
बाण्या कै घर में चोर

बणिया न फेकी राँपी
सरकार कू जा साँपी
सरकार न फेंकी कलम
बाबा भैंरू की ढुड़की चलम
बाबा भैंरू नै फेक्यों गोड़ो
गोपी होगो बोड़ो
गोपी न फेंकी सूँई
सूँई नै खोद दी कुँई

(राजस्थान के विभिन्न अंचलों में थोड़े बहुत रूप भेद के साथ सुनी और सुनायी जाने वाली यह लोक कविता **मानसिंह गुर्जर,** शाला–सहायक, बोदल ने भेजी है।)

नंदिनी,उम्र साढे तीन वर्ष

इज़्ज़त

जब मैं कक्षा 3 में पढ़ता था। तब मैं पढ़ने कम ही जाता था, क्योंकि मेरे रुखसाना मैडम देती (मारती) थी। एक दिन मैं स्कूल में नहीं गया। बच्चे मुझे बुलाने आये लेकिन मैं नहीं गया। अगले दिन पढ़ने गया तो मुझे मैडम ने बुलाया। मैं काँपने लगा। मैडम ने कहा, ''मुर्गा बन जा।'' मैने काँपते हुए कहा–''मैडम मैं तो लड़का हूँ मैं मुर्गा कैसे बनूंगा ?'' मैडम ने मेरे दो थप्पड़ मारे और कहा–''मुझसे उल्टा बोलता है ?'' इतने में ही रेस्ट हो गयी। रेस्ट के बाद मैं पढ़ने नहीं आया तो मैडम मेरे घर ही आ गयी। मेरे घर पर कोई नहीं था। मैडम मेरे देती–देती (मारती–मारती) स्कूल में ले आई। मुझे गाँव में इतनी शर्म आई कि मेरा मन में आया कि मैडम के मार दूँ। लेकिन मैं क्या करता ?मैं मैडम के नहीं मार सकता था। मैं कक्षा में बैठ गया। तभी स्कूल में कलेक्टर आया। मैडम स्वेटर बुन रही थी। मैंने मैडम से कहा–'अब इससे कह दूं कि मैडम मुझे मारती है ?'' मैडम बोली–''आज के बाद तेरे नहीं मारूँगी।''

मैंने मैडम की इज़्ज़त बचाई लेकिन मैडम ने मेरी इज़्ज़त नहीं करी।

रणवीर गुर्जर, उम्र–12 वर्ष, समूह–बादल, बोदल

थर्माकोल का दाँत

मैं अपने समूह में बच्चों को पढ़ा रही थी कि अचानक एक बच्चा मेरे पास आकर जोर–जारे से रोने लगा। उसकी आँखों से झर–झर आँसू झर रहे थे। मैं उसको देखकर घबरा गयी। मैंने सोचा कि इसको क्या हो गया है ?फिर मैंने उसके आँसू पौंछते हुए उससे पूछा कि बताओ तो क्या हुआ ?वह रोते हुए बोला, ''मेला दाँत तूत गया।''

मैने कहा, ''दिखा, मुँह खोल।'' उसने मुँह खोला। मैने देखा उसके सारे दाँत सलामत हैं। मैने कहा, ''तेरा टूटा दाँत कहाँ है ?'' तो उसने मुझे थर्माकोल शीट का एक टुकड़ा दिया। बोला, ''ये लो।'' उसे देखकर मुझे बहुत हँसी आई। मेरे हँसने पर वह जोर–जोर से रोने लगा। फिर मैने उससे कहा कि तुझे दर्द हो रहा है क्या ?तो उसने कहा, ''नहीं'' ''तो रो क्यों रहा है ?''

तब वह बोला की गोलू ने कहा है कि ये तेरा ही दाँत है। तब मैंने कहा कि इस टुकड़े को हाथ से दबाओ और अपने दाँत को दबाओ। फिर मेरे से बोला, ''मैडम या तो दब गयो पर दाँत तो कोनी दबे।'' मैने कहा कि ये तेरा दाँत नहीं है। थर्माकोल शीट का टुकड़ा है। तब वह जोर से हँसने लगा। उसकी आंखों में खुशी की चमक आ गई। उसके साथ सारे बच्चे और मैं भी काफी देर तक हँसते रहे।

श्यामा चौधरी, शिक्षिका, जगनपुरा

भाषा की सहेलियाँ बूझो यार पहेलियाँ

1 जड़ जमा पेड़ लम्बा, फल खाया बीज नहीं पाया। 2 खेत चाली माड़ चाली, लाल–मणियो गाड़ चाली। खेत चाली माड़ चाली ओला सा बिखेर चाली। 3 हरिजात को हरियो नगीनों, ओड्यो वार–त्यौहार हिटाया से नहीं हट्यो, पच गया खाती लुहार। 4 पताल में कुत्ती बोली, पूँछ म्हारा हाथ में। 5 काली गाय वन में ब्याई, बच्चा छोड़ मारबा आई।आठ कुटल्या नौ सौ जाली, थारो पापौ म्हारो हाली। 6 अण काटूँ बण काटू, जीका बाँधू बुहारा या नदी में चौपड़ खेलूँ,देख तमाशा म्हारा। 7 धोड़ौ घोड़ो झाबरी सी पूंछ, नी जाणैं तो थारी मम्मी सू पूछ। 8 उजाड़ बनी में खट–खट करे। उजाड़ बनी में झींतरा फैलार बैठी।

(ये पहेलियाँ कटार–फरिया के बच्चों ने बूझी हैं,क्या तुम्हें इनका जवाब देने की अभी भी नहीं सूझी है ?)

कुछ और पहेलियाँ अकेले बोदल के बादल समूह के राजेन्द्र गुर्जर की तरफ से।

1 नौ गज पेड़, सवा गज डाँडी, बिन्या कुम्हार बणी एक हाँडी
बिना जमाये जम गयौ दही, मर्द का पेट में स्त्री भयी ?
2 आठ पँगेड़ी बाट पँगेड़ी, राजाजी झूलै नौ पँगेड़ी।
3 लौह को कोटो, लो का ही प्याण। जीमैं बैठी गोगली ब्याण।
4 एक पटेल डोलम–डोला। कंधा पै धोत्ती माथा पै दो फौंदा।
6 एक पक्षी ऐसा, ताल किनारे रहता
दुम से द्रव पीता, मुँह से आग उगलता।
7 कारीगर करतार को, सब लकड़ी को जाणैं नाम
फूल से पहले फल पड़ जाय,इस लकड़ी का क्या है नाम।
8 हर्यौ कच–कच,नारी सौ डण्डौ
मसरी को टूक,बैल को सो गण्डौ।
9 डोकरा का कान म, डोकरी उड़गी।

(फरिया–कटार वालों ने पहेली पूछी, सबने मिलकर ग्यार्हा
राजेन्द्र ने अकेले ने ही नौ पूछी, शाबाश रै प्यारा।)

अगस्त अंक की शेष पहेलियों के जवाब

7 काली गाय बन में बिया आई बच्चे छोड़ घर को आई। जवाब–'बंदूक'
9 मँगायी बीड़ी ले आयौ बंडल
जब लक्ष्मण के शक्ति–बाण लगा तो हनुमान जी के हाथ संजीवनी–बूटी मँगवाई। हनुमान जी को समझ में नहीं आया यहाँ कौनसी बूटी संजीवनी है सो वे पूरा पर्वत ही उठा लाए, जिस पर संजीवनी बूटी थी।
10 सात कबूतर सात रंग का दड़ा में घुसते ही एक रंग का। जवाब–'पान'
इन दो पहेलियों के कोई माकूल जवाब अभी–भी नहीं मिले है–
3 दो दरवाजा जिमें दादाजी पछाड़ा खाता जावै।

कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ
बात में जोड़ो बात, गीत में कड़ी लगाओ

`

फूलों के रंग क्यों हजार ?
धरती क्यों हरी, क्यों लाल ?

1
सरसों क्यों है हरी, पीली
फसलें क्यों है हरी–भरी
बादल क्यों है सफेद–काले
खेतों के रंग क्यों है निराले
मानव क्यों हैं भूरे–काले ?
फूलों के रंग क्यों हजार?
धरती क्यों हरी क्यों लाल?

दिनेश मीणा, उम्र–11 वर्ष, समूह–झील

2
मेरे मन में है हजारों रंग
सब को देखती हूँ
सब आते हैं पसंद
पर कौन सा रंग
हजारों में दिखता है अच्छा–अच्छा
क्यों कहते हैं इनको हजारों रंग
फूलों के रंग क्यों हजार
धरती क्यों हरी क्यों लाल

सीमा मीणा, उम्र–11 वर्ष, समूह–झील,

3
पापा मुझे मारते क्यों ?
मम्मी जी पुचकारती क्यों ?
मास्टर हमें पढ़ाते क्यों ?
लोग शादी करते क्यों ?
नेता भाषण देते क्यों ?
लोगों को भड़काते क्यों ?

जितेन्द्र गुर्जर, उम्र–14 वर्ष, समूह–बादल

छुक–छुक करती आई गाड़ी,
मोहन बोला रूक जा गाड़ी।

1
मोहन लगा ढूँढने झंडी
नहीं मिली मोहन को झंडी
मोहन हुआ बहुत नाराज,
घर पर जाने को तैयार
इतने में फिर रूक गयी गाड़ी,
रूक जा मोहन बोली गाड़ी
जाते–जाते रुक गया झट से
बैठ गया गाड़ी में फट से

अंकित, अमन, उदय, स.मा.

2
छुक–छुक करती आई गाड़ी
मोहन बोला रूक जा रूक जा गाड़ी
गाड़ी रूकी धप से
मोहन बैठा गप से
पैसे देकर खुल्ले
खाये उसने रसगुल्ले

रिया, सेजल, भूमिका,उदय स.मा.

3
छुक–छुक करती आई गाड़ी
मोहन बोला रुक जा गाड़ी
गाड़ी बोली नहीं रूकूँ
मोहन बोला पत्थर मारूँ
गाड़ी बोली टक्कर मारूँ
मोहन का झटका है
गाड़ी की मरजी है
मोहन भागा घर पे
गाड़ी भागी पुल पे।

प्रियंका मीणा, समूह–सागर,उम्र–11 वर्ष,
राजेन्द्र गुर्जर, उम्र–11 वर्ष, समूह बादल

4
छुक–छुक करती आई गाड़ी
मोहन बोला रूक जा गाड़ी
मोनू बोला आजा गाड़ी
माइक में तेरी खबर आ रही है
यात्री देर से खड़े हैं बैठने के लिए
देर से झाँक रहे हैं
होरन देती आजा गाड़ी
खटल खटल करती आजा गाड़ी
दूसरी लाईन पर आ रही है गाड़ी
उसको देख खड़े हो रहे हैं यात्री

बीना मीणा, समूह–झील, उम्र–12 वर्ष

5
छुक–छुक करती आई गाड़ी
मोहन बोला–रुक जा गाड़ी
मोहन के साथ में थी उसकी लाड़ी
लाड़ी को देखकर रूक गयी गाड़ी
लाड़ी बोली–चल दे गाड़ी
गाड़ी ने सोचा–
जाने क्या कह रही है लाडी
छुक–छुक करती चल दी गाड़ी

रचना गुर्जर, समूह–सूरज

6
छुक छुक करती आई गाड़ी
मोहन बोला रूक जा गाड़ी
मोहन बोला–चल दे गाड़ी
लेकिन आगे आ गई पाडी
पाडी देख रुक गई गाड़ी

विनीता बाई, समूह–सूरज, उम्र–10 वर्ष

7
छुक–छुक करती आई गाड़ी
मोहन बोला रूक जा गाड़ी
रूकते ही गाड़ी, उतरी भीड़
चढने को भी मचली भीड़
सवारी बोली आने दो
अपने घर को जाने दो
उतरो जल्दी हमें चढ़ने दो
माता जी को आने दो
भीड़ में घुस गया एक अनाड़ी
उसने सबकी जेबें फाड़ी।
पकड़ो उसको भागा चोर
मोहन ने मचाया शोर
टीटी ने जब मारी सीटी
लटक झटक कर चढ गयी भीड़

विष्णु गोपाल, शिक्षक, जगनपुरा

तनु श्री कुमावत,उम्र पांच वर्ष

सितम्बर अंक में दी गई बकरी और औरत की कहानी को बच्चों ने इस तरह आगे बढ़ाया है

बकरी उसकी दोस्त बन गयी

एक पेड़ था। उसके नीचे एक औरत बैठी थी। एक बकरी आई उसने पूछा, ''तुझे क्या दुख है ?औरत बोली, ''मुझे कुछ भी दुख नहीं है।'' यह सुनकर बकरी वहाँ से चली गयी। औरत पूरी रात जंगल में उस पेड़ के नीचे बैठी रही। सुबह हुई तो वह औरत वहाँ से जाने लगी। तभी वहाँ पर एक शेर आया। शेर ने औरत को पंजा मारकर मार दिया व खा लिया।

कुछ देर बाद बकरी उसी पेड़ के पास आई। उसने सोचा औरत उसी पेड़ के नीचे बैठी होगी। मैं उससे बात करूँगी कि उसे क्या दुख है ?लेकिन जब वह उस पेड़ के पास पहुँची तो वहाँ पर वह औरत नहीं थी। पेड़ के पास उसे उस औरत की हड्डी दिखाई दी। बकरी ने सोचा इस औरत को किसने मार दिया और वह रोने लगी। शेर उसी पेड़ के पीछे छिपकर देख रहा था। शेर ने सोचा की यह बकरी उसी औरत के लिए रो रही है जिसे मैंने खाया है। बकरी उस औरत के बारे में सोचने लगी और रोने लगी। उसने सोचा कि इस जंगल में तो शेर भी हैं और शेर ने ही उस औरत को मारकर खा लिया होगा। शेर ने सोचा अब इस बकरी को भी मारकर खा जाता हूं। उसने अपने तीन दोस्तों को बुलाया और कहा कि हम इस बकरी को मारकर चारों बराबर बाँट कर खा लेंगे।

अगले दिन बकरी फिर उसी पेड़ के पास आई। चारों शेर आस–पास ही छिप गये। अब वे चारों शेर उस बकरी के सामने आ गये। उनमें से एक शेर बकरी की पीठ पर बैठ गया। बकरी दबकर जमीन पर लेट गयी। उसकी गर्दन में दर्द होने लगा और जैसे ही उसने अपनी गर्दन ऊँची की उसके दोनों सींग शेर की आँखों में घुस गये और शेर अंधा हो गया। इसी तरह एक–एक करके बकरी ने चारों शेरों को अंधा कर दिया। बकरी बच गयी और वहाँ से भाग गयी।

अगले दिन बकरी फिर उसी पेड़ के पास गई। वहाँ उसे एक औरत दिखाई दी जो कि उसी औरत जैसी थी जिसे की शेर ने खाया था। उस औरत को देखकर बकरी बहुत खुश हो गयी और उसकी दोस्त बन गयी। **रेनी, उम्र–6 वर्ष, समूह–इन्द्रधनुष**

औरत मज़े से रहने लगी

एक पेड़ था। उसके नीचे एक औरत बैठी थी। एक बकरी आई। बकरी ने कहा, ''बहन तुझे क्या दुख है ?'' औरत बोली, ''मुझे कुछ भी दुख नहीं है।'' बकरी बोली, ''झूठ मत बोल, तेरे चेहरे से लग रहा है तुझे दुख है। औरत बोली मुझे इस बात का दुख है कि मुझे उनके

माता–पिता ने निकाल दिया है।
बकरी बोली, ''किसके माता–पिता ने और कहाँ से ?
औरत बोली मुझे उनके माता–पिता ने घर से बाहर निकाल दिया।
बकरी गुस्से से बोली, ''अरे किसके माता–पिता ने ?
औरत धीरे से बोली मेरे पति के माता–पिता ने क्योंकि मैं मोटी हूँ इसलिए सारे दिन सोती हूँ। बकरी बोली तू मेरे साथ तेरे घर चल। औरत चली गयी। बकरी ने औरत के पति के माता–पिता से कहा चुपचाप इसको रख लो। औरत के पति के माता–पिता ने कहा नहीं रखेंगे। और उन्होंने बकरी को खूब मारा।

बकरी और औरत वहाँ से चले गए। दोनों को एक लोमड़ी दिखाई दी। औरत और बकरी लोमड़ी के पास गयी। औरत ने लोमड़ी को सारी बात बता दी। लोमड़ी ने कहा ठीक है मैं तुम्हारे साथ चलूँगी। वे तीनों औरत के घर गए। औरत के पति के माता–पिता से लोमड़ी ने कहा, ''इसे चुपचाप से रख लो वरना ठीक नहीं होगा।'' औरत के पति के माता–पिता ने उसे रख लिया।

औरत के पति के माता–पिता उस औरत को जब भी निकालने लगते तो वह कहती, ''लोमड़ी और बकरी को बुलाऊँ क्या ?'' उस औरत के पति के माता–पिता डर जाते अब वे उसको बाहर निकलने को कभी नहीं कहते।
अंकित, उम्र 10 वर्ष, उदय, सवाई माधोपुर

बकरी, औरत, डोकरी और कुम्हार

एक पेड़ था। उसके नीचे एक औरत बैठी थी। एक बकरी आई। बकरी ने कहा बहन तुझे क्या दुख है ?औरत बोली, ''बकरी बहन मुझे क्या भी दुख नहीं है।''
''तो तुम ऐसे क्यों बैठी हो ?'' बकरी ने पूछा।
औरत बोली,''ऐसे ही।'' बकरी औरत से बोली, ''तुम मेरे लिए छोटी सी डाली गिरा दो तो मुझे भूख नहीं लगेगी, मेरे पेट की भराई हो जायेगी। और तुम अपने लिए फल तोड़ लो तो तुम्हारे भी पेट की भराई हो जायेगी। तब अपन दोनों घर चलेंगे।''
औरत, बकरी से कहने लगी, ''आप का घर कैसा है ?''
बकरी ने कहा, ''मेरा घर मिट्टी का है।''
औरत बोली मेरा पत्थर का है।
बकरी ने पूछा, ''तुम्हारा नाम क्या है ?''
औरत बोली, ''चंदा।''
बकरी बोली, ''चंदा बहन तुम इतनी उदास क्यों हो ?''
चंदा बोली, ''नहीं मुझे तो कुछ भी दुख नहीं।''
बकरी बोली, ''अगर नहीं बतायेगी तो तुम्हारी मां की कसम है।''

नंदिनी,उम्र साढे तीन वर्ष

चंदा बोली, ''ठीक है बताती हूं। मेरे पति ने मेरे मारी थी इसलिए मैं यहां बैठी हूं। बकरी ने कहा कि चंदा तुम यहीं अपना घर बना लो। औरत ने कहा कि ठीक है। बाद में औरत ने एक घर बना लिया। अब वो औरत बकरी का दूध पी लेती।

औरत ने कहा कि अब मुझे कोई दुख नहीं है। उसकी बात सुनकर बकरी को लगा कि इसको कुछ भी दुख नहीं है तो वह आगे बढ़ गई। उसे रास्ते में एक डोकरी दिखी। वह एक हैण्डपम्प पर बैठकर रो रही थी। बकरी ने उससे कहा कि तू क्यों रो रही है ?उसने कहा कि बेटी में पानी भरने के लिए आई थी। लेकिन मुझसे ये घड़ा उठाया नहीं जा रहा था। एक आदमी आया। मैंने उस आदमी से यूँ कह दिया कि जाने वाले सुनो ये घड़ा उचा जा। उसने मेरा घड़ा फोड़ दिया। अब मुझसे मेरा बेटा लड़ेगा। बकरी बोली तू रो मत मैं कैसे भी करके तुम्हारे लिए घड़ा लेकर आती हूं। वह बोली की तो जा लेकर आ जा। मैं जब तक यहाँ ही खड़ी हूँ।

बकरी कुम्हार के पास गयी। उसने कुम्हार से कहा कि तू मुझे ले ले लेकिन मुझे एक घड़ा दे दे। कुम्हार ने सोचा कि एक घड़ा दे देते है और फिर इस बकरी को ले लेंगे। कुम्हार ने उस बकरी को घड़ा दे दिया। बकरी ने वह घड़ा उस डोकरी को दे दिया। और फिर वह बकरी उस कुम्हार के पास चल गई।

(इस कहानी में झील समूह के चेनसुख मीणा, रामधणी मीणा, लोकेन्द्र मीणा व रामवीरआदि बच्चों की बढ़ायी कहानी के अंशों को शामिल किया गया है।)

हम्मीर की चीख

एक बार एक राजा था। उसका किला जंगल में था। उस राजा का नाम हम्मीर था। हम्मीर बलवान और वीर था। वह जब शिकार करने जाता तो शेर का ही शिकार करता था। हम्मीर ने अपने किले में शेर की खाल लटका रखी थी। वह खालों को विदेश में बेच देता था। फिर एक बार हम्मीर शिकार करने गया। जंगल में उसने देखा कि शेरनी अपने बच्चों के साथ खेल रही है। उन्हें देखकर उसकी आँखों में आँसू आ गये। वह बैठकर सोचने लगा कि अपने भी तो बच्चे है अगर मैं अपने बच्चों को मार दूं तो मेरे कितना दुख होगा। और वह जोर से रोने लगा। राजा हम्मीर की चीख सुनकर सैनिक आया। राजा हम्मीर ने सैनिक से कहा कि आज के बाद जो भी शेर से शिकार करता है तुम उसे शिकार नहीं करने देना। राजा हम्मीर की बात सुनकर सबने शिकार करना बंद कर दिया और महल में पकड़े शेरों को आजाद कर दिया।

रामवीर, उम्र–10 वर्ष, समूह–झील

(इन्होंने भी कहानी आगे बढ़ाकर भेजी थी। जगह की कमी की वजह से उन्हें शामिल नहीं किया जा सका है– बीना मीणा, सीमा मीणा, दिनेश मीणा, समूह–झील दिलराज मीणा, समूह–झील, व हरिसिंह गुर्जर, समूह–बादल।)

नीचे दी गई कहानी की शुरूआत देवीलाल (कटार–फरिया) ने की है। इसे आगे बढ़ाओ और पूरी करके मोरंगे को भेजो।

लकड़ी लोहे के आदमी

एक गाँव में एक लोहे का आदमी रहता था और एक गाँव में एक लकड़ी का आदमी रहता था। लकड़ी का आदमी जब बहरावंडा जाता तो लोहे का आदमी उसे मार–मार के भगा देता। एक दिन लकड़ी के आदमी ने नदी खोदी। उधर लोहे के आदमी ने नाव बनाई। ...

नीचे दी गई कविता पंक्तियां रसाल मीणा, (इन्द्रधनुष समूह) की हैं। इन पर कविता आगे बढ़ाओ और पूरी करके मोरंगे को भेजो।

टीना, मीना, चिंकी, चंदर,
बड़ी शरारत उनके अंदर

अमन

प्रिय प्रभात, मोरंगे का यह अंक (सितम्बर 09) बहुत सुन्दर है। बच्चों के साथ अगर काम किया जाए और उनकी कल्पना को दिशा मिल जाए तो अद्भुत रचना पैदा हो सकती है। और यह अंक इस बात की पुष्टि करता है। इसकी बहुत सी रचनाएँ अद्भुत हैं। उनकी भाषा सुन्दर है और उनमें आई कल्पना नई है। 'बबूल' कविता पढ़ते हुए शमशेर की कविता 'चाँद के साथ गप्पें' याद आती है। यह शैली में उससे मिलती जरूर है लेकिन उसकी नकल बिल्कुल नहीं है और बतौर कविता उससे पूरी तरह अलग है। अंतिम पृष्ठों पर आई कविता की ये दो लाइनें गज़ब की दार्शनिकता लिए हैं– ''फूलों के रंग क्यों हजार ?धरती क्यों हरी, क्यों लाल ?''

'हरी चादर' कविता की इन पंक्तियों में कितने आश्चर्य के साथ कहा गया है–

''ये हरी–हरी चादर/किसकी है धरती पर/ये नन्हें से कद वाली /है कौन खड़ी धरती पर''

'और उसका बच्चा' कविता में सूरज, चाँद के साथ–साथ हैण्डपम्प के बच्चे की कल्पना करने के लिए बहुत 'मासूमियत' चाहिए और यहाँ मासूमियत से मतलब 'बेवकूफी' बिल्कुल नहीं है। मासूमियत वह चीज है जिसके बड़े बड़े कलाकार और लेखक कायल रहे हैं। इस अंक की कहानियाँ भी सुन्दर हैं चाहे वह 'मेरा घर बरसते मौसम में है' हो या 'रोने वाले राजा–रानी' और 'हरे फूल की खुशबू'। 'हरे फूल की खुशबू' में दूध में फूल की खुशबू घुल जाने की कल्पना अद्भुत है। यूं अच्छी रचनाएँ तो और भी बहुत हैं, लगभग पूरा अंक इस लिहाज़ से अच्छा है। 'बादल आजा रे' कविता इस अंक में एक कॉन्ट्रास्ट पैदा करती है। क्योंकि जहां ज्यादातर रचनाओं में बारिश या उसके बाद के सुन्दर दृश्यों के वर्णन हैं वहीं इसमें ऐसे इलाके में जहाँ वर्षा बहुत कम होती है वहाँ मेह की बाट जोहने की पीड़ा की सुन्दर अभिव्यक्ति है। 'पखेरू मेरी याद के' अपने आप में एक सुन्दर रचना भी है। इसे पढ़ना एक डायरी में दर्ज सुन्दर अनुभवों से गुजरने जैसा है। सुखोम्लीन्स्की की रचना 'मैं बादलों के गरजने से नहीं डरता' बाल मन की सटीक अभिव्यक्ति है। ऐसी रचनाएं बच्चों के मन को समझने में हमारी मददगार हो सकती हैं। इस अंक के चित्र भी सुन्दर हैं खासकर 'हरे फूल की खुशबू' कहानी के साथ दिया चित्र जिसमें दो तितलियाँ और कुछ पखेरू उड़ रहे हैं नीचे कुछ वनस्पति दिखाई गई है या 'मेंढकी और ऊँदरो–ऊँदरी' कहानी के साथ दिया गया औरत का चित्र। इस अंक के लिए बहुत–बहुत बधाई। बहुत–बहुत प्यार। प्रमोद, जयपुर

साथी, 'मोरंगे' का जुलाई 09 अंक मिला, बढ़िया। महज 22 पृष्ठों में आपने जिस रचनात्मकता को खोजने और निकालने का काम किया है वह बड़ी पत्रिकाओं में भी बहुधा संभव नहीं। यह प्रयास दीर्घजीवी कैसे हो ?इसका प्रसार कैसे बढ़े ?इसकी चिंता करनी चाहिए। पल्लव, उदयपुर

प्रिय प्रभात जी, आपको मनीष जी पाण्डेय को और आपके सहयोगियों को 'मोरंगे' के लिए बधाई। चारों शालाओ के प्रतिनिधि शिक्षकों का समूह रचनाओं का चयन करता है तो यह भी एक नई बात है। इससे जरूर लाभ होता है। शिक्षकों की शिक्षा होती रहती है। परस्पर बातचीत से और रचनाओं के सामूहिक अवलोकन से बाल–प्रतिभाओं से उनका निकट सम्पर्क हो जाता है। परख के आधारभूत मानदण्डों मे भी निखार आता जाता है। मैं समझता हूँ सृजनात्म्क क्षेत्र में विद्यार्थियों और शिक्षकों की रूचि जगाने व दृष्टि निर्णायक करने का यह एक नया और अच्छा तरीका है। पारंपरिक पद्धति से आपकी यह नई पद्धति भिन्न है। शिवरतन थानवी, जोधपुर

मोरंगे 3 में कम्बख्त उम्र पढ़कर मज़ा आ गया। मेरी भी बचपन की यादें ताज़ा हो गईं। बाकी अभी पढ़नी है। मदन मीना, कोटा

इस बार मोरंगे में प्रौढ़ता दृष्टिगोचर होती है। हर प्राणी और पेड़–पौधे में हर क्षण प्रौढ़ता आती है तो फिर मोरंगे क्यों अछूता रहे ?बहुत बड़ा काम कर रहे हैं आप। आपकी इन प्रवृत्तियों में रस लेने वाले बच्चो में संवेदनशीलता का इज़ाफ़ा होगा और आगे जाकर उनके लेखक और पत्रकार बन जाने की सम्भावना को नकारा नहीं जा सकता है। पथिक वर्मा, सम्पादक, अरावली उदघोष

मेरे को तो हरी चादर वाली बात बहुत अच्छी लगी क्योंकि इसमें अच्छी बातें लिख रखी हैं। दूसरी बात घोड़े का चित्र। यह दो चीज ही अच्छी लगी। लेकिन मेरे को सब से बुरी बात यह लगी कि मेरी कहानी और चित्र चुटकले यह क्यों नहीं दिया था। क्योंकि हमारी कहानी और चित्र से बुरी चीज दे रखी है इस

कारण मैं और कुछ नहीं बताऊँगा। चौथमल सैनी, समूह–सागर

मुझे कमबख्त–उम्र की अच्छी लगी। प्रभात से तख्त पर स्याही ढुल गयी थी। फिर उसने तख्त पर ही स्याही को लीप दिया था। फिर वह खाट में जाकर सो गया। प्रभात के भाया ने कहा कि स्कूल जा। प्रभात ने कहा कि नींद आ रही है। अनूप मीणा, समूह–सागर

रानी को रोते देखकर राजा भी रोने लगता है और 'कम्बख्त उम्र' और सारी मोरंगे अच्छी लगी क्योकि इसमें मेरी भी रचनायें थी। बहुत धन्यवाद। कर्मा मीणा, रीना मीणा समूह–सागर

'एक गर्भवती महिला सड़क पर जा रही थी। एक रिक्शा वाले ने सवारी सोचकर कहा बहन जी–रिक्शा। स्त्री निराशा से बोली, 'तेरी घरवाली के होगा रिक्शा। मेरे तो लड़का होगा। इस चुटकुले को मोरंगे में जरूर लगाना। धन्यवाद। अजय कुमार सैनी, समूह–सागर

मोरंगे किताब पढ़ी है जिनमें मुझे पखेरू मेरी याद के अच्छी लगी है। मैं बादलों के गरजने से नहीं डरता। वीत्या ने उसकी सुनहरी चोटी को धीरे से छू लिया। हरे फूल की खुशबू मुझे अच्छा लगा। हरे फूल की खुशबू हरी चादर मुझे अच्छा लगा। प्रियंका मीणा, समूह–सागर, उम्र–11 वर्ष

रोने वाला राजा–रानी मेरे को तो अच्छी लगी है क्योंकि अगर उसकी रानी रो रही है तो उसको भी रोने की याद आई कि अपनी रानी रो रही है तो अपन भी रो लें। चेतराम मीना, समूह–सागर

मैने अपनी सभी कहानी कविता, चुटकले पढ़े है। इस में मुझे माया का घोड़ा बहुत अच्छा लगा है। मनराज मीना, समूह–सागर, उम्र–12 वर्ष

दीपक की तितली का चित्र और बस भी बहुत अच्छी लगी है क्योंकि डिलाइवर का जूता खुल कर बस से नीचे गिर गया था इसलिए बस का चित्र भी अच्छा लगा। विक्रम मीणा, समूह सागर

हरे फूल की खुशबू में जो बकरी सरसों का फूल खाकर घर गयी तो चाय में फूल की खुशबू आई। चाय पीने वाले क्यों नहीं समझ पाए कि बकरी सरसों का फूल खाकर आई है ?वे मूर्ख थे, बकरी की चाय को समझ न पाए। रामहरी सैनी, समूह–सागर

मैने जो लिख के दिये थे वो मोरंगे में छप गए हैं जो कि बुरे चित्र थे। हमको माया का घोड़ा भी अच्छा लगा क्योंकि घोड़ा सुन्दर था। श्रीमोहन मीणा, धर्मराज, समूह–सागर

मोरंगे के लिए अच्छी–अच्छी कहानियाँ कविताएँ लिखकर भेजते हैं। मोरंगे के प्रभाव से हम लेखक भी बन सकते हैं। मेरी इच्छा है कि मोरंगे के प्रभाव से हम सबकी ख्याति शायद लेखक के रूप में फैलेगी। मैं इस मोरंगे के प्रभाव से बहुत खुश हूं। मनराज मीना, समूह–सागर

मुझे आपकी मोरंगे अच्छी लगी। इस मोरंगे पर आपको बहुत धन्यवाद। मनकेश मीणा, समूह–सागर

विजेन्द्र

मैं एक पेड़ के नीचे बैठता हूँ

1
मैं एक पेड़ के नीचे बैठता हूँ
मैं एक पेड़ के नीचे खेलता हूँ
मैं एक पेड़ पर चढ़ता हूँ
मैं एक पेड़ के नीचे सोता हूँ
मैं एक पेड़ के नीचे खाना खाता हूँ

2
मैं पेड़
ठंडी हवा देता हूँ
मैं पेड़
पानी भी पीता हूँ

3
मैं एक शेर
जानवरों की
डाँग में रहता हूँ
मैं पेड़
के नीचे लड़ता हूँ
मैं जंगल में रहता हूँ

4
मैं एक आदमी हूँ
मैं आदमी जंगल में जाता हूँ
जंगल में पेड़ के नीचे बैठता हूँ
जंगल में धौंक के नीचे बैठता हूँ
मैं पेड़ को ले जाता हूँ

बनवारी लाल मीणा,
उम्र 10 वर्ष, समूह
झील